NH Debate – 56

"हरियाणवी ग्रामीण-समाज में बच्चों को सही राह पर रखने हेतु सबक सिखाने के तरीके कितने सही, कितने गलत"

हरियाणवी ग्रामीण समाज में बच्चा कोई गलत काम ना करे इससे उसको रोकने का तरीका उसको इसके बारे गलत-सही बता-समझा के रोकना नहीं, अपितु उसको खेतों में थका के रोकना है| पढाई नहीं करता तो चल खेतों में, कहना नहीं मानता तो पेलू तुझे खेतों में| और वाकई में बच्चा इस तरीके से इतना थक जाता है कि वो जो सही काम कर सकता था या कर रहा था, एक छोटी सी गलती की वजह से बड़ों से समझ के नाम पे "थकावट" और "खुन्नस" उत्पन होने से फिर उसको भी सही से नहीं कर पाता| कई केसों में तो ऐसा होता है कि लोग सिर्फ यह बताने को कि खेती कितनी मुश्किल चीज है अच्छे खासे पढाई पे चल रहे बच्चे को भी खेतों में उतार देते हैं और सोचते हैं कि इससे उनका बच्चा खेती की तरफ तो कम से कम मोह नहीं रखेगा| अरे उस तरफ मोह ना रखे वो तो ठीक परन्तु उस मोह ना रखने का भाव जगाने का तरीका उस बच्चे को शारीरिक तौर पर कितना थका देने वाला है, कभी यह सोचा है?

वैसे भी हमारे देश में 14 साल से छोटे बच्चे से बाल-मजदूरी करवाना जुर्म यूँ ही नहीं है, लेकिन हरियाणवी ग्रामीण माँ-बाप यह जुल्म हा के (यानी शौक और धक्का दोनों से) करते हैं अपने बच्चों पर| और यह वाकई में अपराध भरा तरीका है, फिर चाहे यह बच्चों को खेती से मोह छुड़वाने के लिए हो, उनको सजा देने के लिए हो अथवा उनको फिजिकली फिट बनाने तक के लिए क्यों ना हो| और कम से कम उन बच्चों को तो इस रास्ते से जरूर बचाया जावे जो पढाई में स्वत: ही अच्छा करते हों; और अगर कहीं मार भी खा जाएँ तो इतने क्रूर तरीके नहीं होने चाहिए समाज में उनको सबक सिखाने अथवा सही राह पर लाने या बनाये रखने के|

और क्योंकि इतनी नाजुक सी उम्र में बच्चों में इतनी समझ और जज्बा नहीं होता कि वो अपने लिए स्टैंड ले सकें, क्योंकि उन्होंने उतनी पढाई नहीं की होती है तब तक जिससे उनको अपने स्तर पे कुछ करके स्वावलम्बी बनने का हुनर प्राप्त हो| फिर वो भी यही सोचते हैं कि जो यह करने को कहते हैं यही सही होगा और अपने आपको झोंक देते हैं उनके इस सबक सिखाने कहो या खेती से मोह दूर करवाने के कुचक्र में| और क्योंकि इंसान का मूल भाव है कि वो जैसा करता है वैसा ही ढलता है, यानी अनुभव उसको अपनी तरफ खींचता है; तो फिर वह इस सबक सिखने के दौरान खेती का जो अनुभव लेता है उससे मोह होना या इतना तो जरूर होता है कि वो खेती को पढाई का अल्टरनेटिव (alternative) के तौर पर भी देखने लग जाता है लेकिन इसमें अच्छे से उतर इसलिए नहीं पाता क्योंकि यह शारीरिक तौर पर थका देने वाला काम होता है| और ऐसे इस चलन से बच्चा ना सही से पढाई का हो पाता है और ना ही खेती का| और इस मेथड (method) से 90% किसानी जातियों के बच्चे फोर्थ-थर्ड क्लास जॉब (Fourth-third class job) तक पहुँच पाते हैं, मुश्किल से 5-10% ही सेकंड या फर्स्ट क्लास जॉब लेवल (Second or first class job level) को छू पाते हैं| हालाँकि इसकी वजहें और भी हैं, परन्तु यह सब वजहों की सबसे बड़ी वजह है|

और यह चौदह साल से छोटा होते हुए खेतों में काम तो लगभग हर दूसरे किसान का बच्चा करता है अथवा उससे लिया जाता है; जो कि उसके शारीरिक व् मानसिक रूप से स्वस्थ रहने में बहुत ही घातक है| कोई माने या ना माने परन्तु कच्ची उम्र में खेतों में काम करना उसी प्रकार घातक है, जैसे किसी नाबालिग के ब्लू फिल्म देखना|

Author: Phool Malik; **Publisher:** Nidana Heights; **Dated:** 03/02/2015